# देशभूषणजी महाराज अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०४५)


मुख्य टाइटल

आशीर्वचन

प्रणामांजलि

Encyclopedia of the divine practice

संयोजना

प्रस्तावना

अनुक्रमणिका

आस्था

आस्था का अर्घ्य ---------- १-३६

कालजयी व्यक्तित्व ---------- १-१५६

एक कालजयी अपराजेय व्यक्तित्व ---------- १

एक महान सन्त- रत्न ---------- ५७

जैन धर्म के मुख्य नेता ---------- ५७

आदराञ्जलि ---------- ५८

निश्छल व्यक्तित्व ---------- ५८

विरल विभूतियों में एक ---------- ५९

अभिनन्दन ---------- ६०

स्नेह-सौजन्य के साक्षात प्रतीक ---------- ६१

आचार्यश्री के प्रथम दर्शन ---------- ६२

सन्त- रत्न ---------- ६३

महाराज श्री की जीवन झांकी ---------- ६४

श्री महावीर वाणी के उदघोषक ---------- ६७

यतिवर्य नमोडस्तु ---------- ६८

मेरे शिक्षा गुरु ---------- ६८

विश्वविभूति ---------- ६९

उच्च कोटिके आचार्य ---------- ६९

जैन शासन के उज्जवल नक्षत्र ---------- ७०

अदभूत है उनकी व्याख्यान शैली ---------- ७१

प्रात स्मरणीय ---------- ७१

परोपकारी गुरुदेव ---------- ७२

विनम्रता की प्रतिमूर्ति ---------- ७४

महान उपकारी ---------- ७४

अलौकिक जीवन ---------- ७५

पावन धर्मतीर्थ ---------- ७५


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारत गौरव---------- ७६
संत शील के भूषण---------- ७६
संकल्प और त्याग की प्रतिमूर्ति ----------७७
भारत की शोभा ---------- ७९
सिद्ध पुरुष ---------- ७९
भारत गौरव---------- ८०
जनकल्याणकारी सन्त---------- ८०
बन्दियों की भावना----------८१
Homage to Acharyaratna Shri deshbhushana ji ---------- ८३
साधुरत्न आचार्य देशभूषण महारज----------८७
आध्यात्मिक एवं सामाजिक उपलब्धियों के समग्रद्रष्टा ---------- ९०
अनुभूती की जाती है,कही नहीं जाती----------९१
जिन शासन प्रभावक ---------- ९२
श्रमण- परम्परा में एक ज्योतिर्मय व्यक्तित्व----------९५
महान प्रभावक दिगम्बर सन्त ---------- ९८
राष्ट्रीय एकता के आध्यात्मिक गुरु ---------- ९९
पावन स्मृतियाँ---------- १००
मेरे शिक्षा गुरु----------१०१
समन्वय सेतु---------- १०२
आचार्यरत्न अलीगढ नगर में ---------- १०४
आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज ---------- १०५
स्मृर्तियां जो धुंधलायी नहीं ---------- १०६
युगाचार्य महान सन्त---------- १०७
भूली-बिसरी यादे ---------- १०८
धर्मचक्र प्रवर्तक ----------११०
आचार्य महाद्रु मं वन्दे---------- १११
वन्दनीय पंचक----------११२
साधना के मूर्तरुप ----------११२
कुछ अमिट यादे ----------११३
लोककल्याणकारी साधक----------११३
मेरा तो उद्धार हो गया---------- ११४
धर्म के महान आचार्य ---------- ११४
सचल तीर्थ---------- ११५
शत- शत वन्दन ---------- ११५
प्रणामांजलि ----------११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देश और समाज के भूषण ----------११६
महान व्यक्तित्व ----------११६
दिव्य पुरुष---------- ११७
प्रेरणा के अमिट स्त्रोत ---------- ११७
कालजयी चिन्तन के कुछ स्वर ----------११८
परमकारुणिक आचार्यश्री ---------- १२०
चारित्र शिरोमणि ---------- १२०
श्री पार्श्वनाथ दिमगम्बर जैन मन्दिर जी के उद्धारक----------१२१
राजस्थान में आचार्य देशभूषण जी ---------- १२२
सन्त शिरोमणि परम गुरुदेव---------- १२३
कलकत्ता में ससंघ पदार्पण---------- १२४
सिद्धियों के धनी---------- १२४
श्रावक सदकर्म करता रहे ---------- १२५
निर्भिक और मार्मिक वक्ता ---------- १२५
धर्मध्वजा के उन्नायक ---------- १२६
साधवो न हि सर्वत्र---------- १२६
एक अपूर्व अतिशयी घटना---------- १२७
A Devotees Homage ---------- 127
अतिशय क्षेत्र (बरेली) का विकास ---------- १२८
उपसर्ग विजेता ---------- १२८
सार्वजनिक हित के प्रेरक ---------- १२९
साडी पर हवन ---------- १२९
सजीव तीर्थ ---------- १२९
विश्वविभूति---------- १३०
आरा (बिहार) में महाराज का लेखन कार्य---------- १३०
अदभूत स्मृति के धनी ---------- १३०
साधना की पराकाष्टा----------१३१
पवित्र जीवन ----------१३१
निष्काम साधक ---------- १३२
श्रमण संस्कृति के उन्नायक ---------- १३२
सफल मार्गदर्शन ---------- १३३
तपस्वी साधुराज ---------- १३३
पावन व्यक्तित्व---------- १३३
धर्ममूर्ति आचार्यश्री ---------- १३४
आत्मानुसंधान और परकल्याण का संकल्प---------- १३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण शिरोंमणि---------- १३६
On mv having the first darsana of Acharyaratan shri deshbhushan ji Maharaj----- 137
संकल्पों के प्रति निष्ठा ---------- १३८
भक्तवत्सल एवं विनोदप्रिय ---------- १३९
धर्म दीपक ---------- १४०
चन्दनं न वने वने---------- १४०
अनेकान्त साप्वभौम---------- १४०
गुरु गुण लिखा न जाय---------- १४१
गतिशील धर्मचक्र---------- १४२
हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता ---------- १४२
कृपा सिंधु, नर रुप हरि ---------- १४३
राष्ट्रसंत आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज ---------- १४४
सदगुरु महिमा अपार ---------- १४५
शत- शत वन्दन ---------- १४६-१४७
आयरियप्पव रो सिरिदेसभूषणौ---------- १४८
समस्या और समाधान---------- १५१
रसवन्तिका ---------- १-४०
अध्यात्म- पुरुष ---------- १
ईन्द्रीयजी श्री देशभूषण जी ---------- २
क्षितिज से उभरा सूरज ---------- ३
हे सरस्वति- पुत्र ---------- ३
स्तुति- पंचक ---------- ४
हे भारत के संत तेजस्वी ---------- ४
धन्य देश वह ---------- ५
परमहंस आचार्यरत्न को शत- शत बार प्रणाम---------- ६
हे तपोरत्न, भारत- भूषण---------- ७
अभिनन्दन---------- ८
अभिनन्दन---------- ९
कोटि- कोटि प्रणाम ---------- ९
स्तवन---------- १०
कर रहा विश्व वन्दन है---------- ११
हे भविष्य के द्रष्टा ---------- १२
वन्दन करता हूं बार- बार ---------- १३
अभिनन्दन---------- १५
हे आलोक- पुरुष ---------- १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनन्दन होते रहें ---------- १७
शत- शत अभिनन्दन---------- १७
आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी----------१८
हे आचार्य आपकी जय हो ----------१८
अप्रित चरण श्रद्धा- सुमन----------१९
प्रखर सूर्य----------१९
ईस मुनिवन को नमन करो---------- २०
गुरु- गौरव आध्यात्मिक भूषण---------- २०
संस्कृति के महासूर्य ----------२१
मेरा नमन करो स्वीकार ----------२१
आस्था के प्रतीक---------- २२
जयकार तो बोलो---------- २२
ऊन पवित्र पदाम्बुरुह में विनय सहित प्रणाम है---------- २३
शत- शत वन्दन ---------- २४
सचल तीर्थ---------- २५
हे युग-कल्याणी ---------- २५
सार्थवाह ---------- २५
आचार्य देशभूषण जी ---------- २६
शत- शत प्रणाम ---------- २६
विराजो लीलाधारी ---------- २६
तं देशभूषण महर्षिमहं समीडे---------- २७
संस्तुति---------- २७
देशभूषणाष्टकम---------- २८
महाश्रेष्ठवन्दनम्---------- २८
आचार्य- स्तव- द्वादशी---------- २९
देशभूषण गुणस्तुति ---------- ३०
आचार्य देशभूषण- स्तुति ----------३१
आचार्य मुनि देशभूषणमहं वन्दे जगदवन्दितम---------- ३३
आचार्य देशभूषण स्तुति ---------- ३९
आईरयदेशभूषण- थुदी ---------- ३९
सिरिदेवो देशभूषणो जयई---------- ४०
अभिनन्दन---------- ४०
जगदाणदो देशभूषणो ---------- ४०
महाराज श्री की जीवन- गाथा---------- ४१
ए देव, तुम्हारे कदमों में सर अपना झुकाने आया हूं----------४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुल ए अकीदत ---- ४७
अमृत-कण ---- १-११६
जैन धर्म का शाश्वत स्वरुप – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- १
जैन धर्म एवं भक्ति – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- १५
जैन आचार- संहिता – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- ३६
भाव एवं मनोविकार – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- ५९
व्यक्ति एवं समाज – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- ७४
चिन्तन के विविध आयाम – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- ८१
राष्ट्र, को सम्बोधन – आचार्य देशभूषणजी महाराज ---- ११२
सृजन- संकल्प ---- १-८०
साहित्य- पुरुष आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी – डॉ. रमेशचन्द्र गुप्त – सुमतप्रसाद जैन ---- १
भगवान महावीर और उनका तत्व दर्शन – प्रो. सुरेशचन्द्र गुप्त ---- १७
शास्त्रसार समुच्चय – डॉ. मोहनचन्द ---- २१
भरतेश- वैभव – श्री सुमतप्रसाद जैन ---- २५
धर्मामृत – डॉ. रवेलचन्द आनन्द ---- ३१
रत्नाकर- शतक – डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र ---- ३४
योगामृत – डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ---- ३९
अपराजितेश्वर शतक – डॉ. देवराज पथिक ---- ४१
ग्रंथ- शिरोंमणि श्री भूवलय – डॉ. बालकृष्ण अकिंचन ---- ४३
सिरि भूवलय – श्री अनुपम जैन ---- ४७
णमोकार ग्रन्थ – मुंशी सुमेरचन्द जैन ---- ४८
णमोकार ग्रन्थ – श्रीमती निरा जैन ---- ५०
मेरुमंदर पुराण – डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ ---- ५२
उपदेश –सार- संग्रह – डॉ. भरतसिंह ---- ५४
उपदेश- सार संग्रह – श्री जगत भंडारी ---- ५७
श्री निर्वाण लक्ष्मीपति स्तुति – डॉ. राज बुद्धिराजा ---- ५९
गुरु- शिष्य प्रश्नोत्तरी – डॉ. सुरेश गौतम ---- ६१
ढाई हजार वर्षो में श्री भगवान महावीर स्वामी की विश्व को देन – डॉ. नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी ---- ६३
दशलक्षण धर्म – डॉ. सतीषकुमार भार्गव ---- ६४
नर से नारायण – श्री गुरुप्रसाद कपूर ---- ६६
चोदह गुणस्थान चर्चा कोष – श्री सुनील कुमार ---- ६७
एमोकार- मन्त्र- कल्प – श्री युगेश जैन ---- ६९
णमोकार- मन्त्र-कल्प – पं. संदीपकुमार जैन ---- ७४
भावनासार – डॉ. लालचन्द जैन ---- ७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावनासार – डॉ. प्रमोदकुमार जैन ---------- ७८
धर्मामृतसार – कु. रुचिरा गुप्ता ---------- ७९
मानव जीवन – वैद्य प्रेमचन्द जैन ---------- ८०
भगवान महावीर और मानवता का विकास – वैद्य प्रेमचन्द जैन ---------- ८०
शास्त्र- गुच्छक – वैद्य प्रेमचन्द जैन ---------- ८०
स्वानुभूति से रसानुभूति की और – डॉ. मोहनचन्द ----------८१

चिन्तन

जैन दर्शन मीमांसा - ---------- १-१७६
सम्पादकीय ----------१
स्याद्वाद साहित्य का विकास – श्री आनन्द ऋषिजी महाराज ----------९
द्वैतवाद और अनेकान्त – युवाचार्य महाप्रज्ञजी ---------- १७
स्याद्वाद सिद्धान्त मनन और मीमांसा – श्री रमेश मुनि शास्त्री----------२१
अन्य दर्शनों में अनेकान्तवाद के तत्व – श्री सुव्रत मुनि ---------- २६
स्याद्वाद – डॉ. सत्यदेव मिश्र ---------- २९
समन्वय का मार्ग स्याद्वाद – डॉ. अरुणलता जैन ---------- ३३
सत्य की सर्वाङ्ग साधना – श्री देवेन्द्र मुनि ---------- ३७
तत्वज्ञता – श्री जिनेन्द्र वर्णी ---------- ४८
जैन- दर्शन में द्रव्य की अवधारणा – श्री कपूरचन्द जैन ---------- ५२
The jaina idea of universe – Prof. M. S. Ranadive ---------- 65
Jain concept of living – Dr. J. D. Bhomaj ---------- 69
जैन दर्शन सम्मत – डॉ. प्रेमचन्द जैन----------७७
जैन दर्शन में जीव आत्मा – डॉ. श्रेयांसकुमार जैन ----------८१
पुदगल और आत्मा का सम्बन्ध – आचार्य अनन्तप्रसाद जैन ----------८५
जैन कर्म सिद्धान्त तुलनात्मक विवेचन – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ----------८७
जैन दर्शन में बन्ध मोक्ष – प्रो. अशोककुमार ---------- ८९
आचार्य कुन्दकुन्द की संतुलित दृष्टि – डॉ. लालबहादुर शास्त्री---------- ९३
प्रवचनसार में संसार और मोक्ष का स्वरुप – डॉ. रमेशचन्द्र जैन ---------- ९६
श्रवणवेलगोला के अभिलेखों में जैन तत्व चिन्तन – श्री जगबीर कौशिक ----------१०१
प्रमाणमीमांसा एक अध्ययन – श्री श्रीचन्द चोरड़िया ---------- १०५
योगिप्रत्यक्ष एक विवेचन – डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर----------११३
शब्दाद्वैतवाद जैन दृष्टि – डॉ. लालचन्द जैन ---------- ११५
आदिपुराण में जैन दर्शन के तत्व – डॉ. उदयचन्द जैन---------- १३२
समन्वय का अमोघ दर्शन अनेकान्त – उपाध्याय अमर मुनि ----------१३७
आगम- साहित्य में योग के बीज – मुनि श्री राकेश कुमार ---------- १४०
आचार्य कुन्दकुन्द और उनका दार्शनिक अवदान – डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री ----------१४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारतीय दर्शन के सन्दर्भ में जैन महाकाव्यों द्वारा विवेचित....- डॉ. मोहनचन्द ---------- १५१
Kundakunda on samkhya- purusa – Dr. Shiv Kumar ---------- 161
Some less known verses of siddhasena divakara – Prof. M. A. Dhaky ---------- 165
The style of writing for debate in Indian philosophy – Shri Bishan Swaroop Rustagi ---------- 169
The Ultimate goal of Jain Philosophy – Prof. J. L. Shastri ---------- 175
जैन तत्व और चिन्तन आधुनिक सन्दर्भ ---------- १-१६८
सम्पादकीय ---------- १
जैन दर्शन की सैद्धान्तिक मान्याताओं के सन्दर्भ में पुमर्जन्म के वैज्ञानिक अध्ययन की समीक्षा – मुनि श्री महेन्द्र कुमार ---------- १४
अपराध वृति एवं जैन दृष्टिकोण से सन्बन्ध एक आधुनिक शोधकार्य की रुपरेखा – डॉ. रमेशभाई लालन ---------- २४
वर्तमान युग में अहिंसा का महत्व – श्री कामेश्वर शर्मा ---------- २७
अनेकान्तवाद और सर्वोदयवाद – डॉ. भागचन्द्र जैन ---------- २९
जैन शास्त्रीय परम्परा एवं आधुनिक वैज्ञानिक...- श्री नन्दलाल जैन ---------- ३२
आधुनिक सन्दर्भ में जैन दर्शन के पुनर्मूल्याङ्कन की दिशाएं – डॉ. दयानन्द भार्गव ------- ३६
सामाजिक समस्याओं में समाधान में जैन धर्म का योगदान – डॉ. सागरमल जैन -------- ४०
जैन दर्शन आधुनिक सन्दर्भ – डॉ. हरेन्द्र प्रसाद वर्मा ---------- ४९
विश्वधर्म के रुप में जैन धर्म-दर्शन की प्रासङ्गिक्ता – डॉ. महावीर सरन जैन ---------- ५८
श्रमण संस्कृति की विश्व मानवता को देन – श्री श्रीकृष्ण पाठक ---------- ६४
जैन धर्म की विश्व को मौलिक देन – डॉ. कस्तूरचन्द सूमन ---------- ६६
आधुनिक युग मैं जैन सिद्धान्तों की उपयोगिता – डॉ. विमल कुमार जैन ---------- ७०
वैज्ञानिक आईने में जैन धर्म – श्री राजीव प्रचंडिया ---------- ७४
परम ज्ञानियों में एक वैज्ञानिक महावीर – स्वामी वाहिद काजमी ---------- ८०
आधुनिक धार्मिक एकता के परिप्रेक्ष्य में तुलसी... – श्री जगत भंडारी ---------- ८७
गुजरात के ईतिहास- निरुपण में आधुनिक जैन साधुओं का योगदान – श्री रसेस जमीदार ---------- ९२
The survival of Jainism – Prof. Bansidhar Bhatt ---------- 97
Studies in south Indian Jainism – Dr. B. K. Khadabadi ---------- 103
Evolution agriculture and the jain philosophy – Dr. H. K. Jain ---------- 108
How karma theory relates to modern science – Dr. Dulichandra Jain ---------- 112
aparigraha, its relevance in modern times – Prof. Angraj Chaudhary ---------- 123
importance of morakity in Jainism – Sh. J. B. Khanna ---------- 128
आधुनिक भाषाविज्ञान के सन्दर्भ में जैन प्राकृत – मुनि श्री नगराज जी.डी. ---------- १२९
Values education and Jainism – Sh. Som Pal Sharma ---------- 163
जैन प्राच्य विद्याएँ ---------- १-२२०
सम्पादकीय ---------- १
जैन जगत्- उत्पति और आधुनिक विज्ञान – प्रो. जी. आर. जैन ---------- ९
Some sarange notions in jaina cosmology – Dr. Sajjan Singh Lishk ---------- 15

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रारम्भिक जैन ग्रन्थों में बीजगणित – डॉ. मुकुट बिहारीलाल अग्रवाल ----------१९
Contribution of Ancient Jaina Mathematicians – Dr. B. S. Jain ---------- 33
The Jaina Ulterior Motive of Mathematical Philosophy – Prof. L. C. Jain & Shri C. K. Jain ---------- 49
जिनभद्रगणि के एक गणितीय सूत्र का रहस्य – डॉ. राधाचरण गुप्त ---------- ६०
Contribution of mahaviracharya in the… - Dr. R. S. Lal ---------- 63
महावीराचार्य कृत गणितसार संग्रह – डॉ. एलेक्जांडर वोलोदार्स्की ----------७७
Survey of the work done on jain mathematies – Shri. Anupam Jain ---------- 105
संस्कृत व्याकरण को जैन आचार्यों का योगदान – डॉ. सूर्यकान्त बाली ----------११३
पूज्यवाद देवनन्दी का संस्कृत- व्याकरण को योगदान – डॉ. प्रभा कुमारी----------१३१
आयुर्वेद के विषय में जैन दृष्टिकोण और जैनाचार्यो का योगदान – आचार्य राजकुमार जैन ---------- १६९
दक्षिण में जैन- आयुर्वेद (प्राणावाय) की परम्परा – डॉ. राजेन्द्र प्रकाश भटनागर --------- १८३
आयुर्वेद को जैन सन्तों की देन – डॉ. तेजसिंह गौड़ ---------- १९७
आयुर्वेद और जैन धर्म एक विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. प्रमोद मालवीय, डॉ. शोभा मोवार, डॉ. यज्ञदत्त शुक्ल, प्रो. पूर्णचन्द्र जैन---------- २०१
संगीत समयसार के सन्दर्भ में गायक- गण दोष- विवेचन – श्री वाचस्पति मौद्गल्य ------२०५
जैन साहित्यानुशीलन ---------- १-१८८
सम्पादकीय ----------१
संस्कृत में प्राचीन जैन साहित्य – डॉ. शिवचरणलाल जैन----------९
जैन संस्कृत महाकाव्यों में रस – डॉ. पुष्पा गुप्ता ----------१२
The jaina contribution to Indian poetics – Dr. K. Krishnamoorthy ---------- 40
Exposition of sabda- shaktis by siddhicandragani – Dr. Satyapal Narang ---------- 44
The Ramayana of Valmiki and the Jaina Puranas – Dr. Upendra Thakur ---------- 48
जैन साहित्य में राम भावना – डॉ. शशिरानी अग्रवाल ----------५५
जैन राम- कथा की विशिष्ट परम्परा – डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा ----------६१
राम- कथा का विकास प्रमुख जैन काव्यों तथा आनन्द रामायण.. – डॉ. अरुण गुप्ता ------ ६४
जैन रामायण पउमचरिउ का व्यावहारिक महत्व – श्रीमती विणा कुमारी ----------७४
स्वंयभू- रचित पउमचरिउ में वर्णित राम का व्यक्तित्व – ----------७७
जैन धर्म तथा दर्शन के सन्दर्भ में उत्तरपुराण की रामकथा –----------८१
जैन राम-कथाओं में धर्म – डॉ सुरेन्द्रकुमार शर्मा ---------- ९०
प्राकृत- जैन कथा साहित्य का महत्व – सुधा खाव्या ---------- ९७
जैन अपभ्रंश कथा- साहित्य का मूल्यांकन – श्री मानमल कुदाल ---------- १०७
जैन भक्तकवि बनारसीदास के काव्य- सिद्धान्त – डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त----------११२
जैन- हिन्दी- पूजा- काव्य में अष्टद्रव्य और उनका प्रतीकार्य – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया -----११९
हिन्दी के विकास में जैन विद्वानों का योगदान – डॉ. प्रेमचन्द रांवका ---------- १२४
जैन दर्शन में वीर भाव की अवधारणा – डॉ. नरेन्द्र भानावत---------- १२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन रास काव्य एक अध्ययन – डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ ---------- १३०
जैन हिन्दी- काव्य में व्यह्नत संख्यापरक काव्य-रुप – डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया ---------- १४४
१६ वी शताब्दी का अचर्चित हिन्दी कवि बह्म गुणकीर्ती – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ---- १४७
भगवान नेमिनाथ एवं राजमति से सम्बन्धित हिन्दी रचनाएं – श्री वेदप्रकाश गर्ग -------- १५०
कवि-कंकण छीहल पुनर्मूल्यांकन – डॉ. कृष्ण नारायण प्रसाद ---------- १५७
प्रबुद्ध रौहिणेय- समीक्षात्मक अनुशीलन - डॉ. रामजी उपाध्याय ---------- १७१
आधुनिक हिन्दी जैन महाकाव्य सीमा और सम्भावना - डॉ. इन्दु राय ---------- १७६
तमिलनाडु में जैन धर्म एवं तमिल भाषा के विकास में...- पं. सिंहचन्द जैन शास्त्री ------ १८०
उर्दु भाषा में जैन साहित्य – डॉ. निजाम उद्दीन ---------- १८६
सम्राट अकबर की जैन धर्म में रुचि – श्री संजय कुमार जैन ---------- १८८
जैन धर्म एवं आचार ---------- १-१५२
सम्पादकीय ---------- १
जैन साधना में ध्यान-स्वरूप और दर्शन – देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---------- ९
जम्बूद्वीप-एक अध्ययन – आर्यिका ज्ञानमती माताजी ---------- १६
परमसिद्धि का चरम सोपान-दिगम्बरत्व – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ---------- २३
जैन श्रमण-परम्परा का धर्म-दर्शन – पं. फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ---------- ३०
श्रमण कौन – डॉ. पन्नालाल जैन शास्त्री ---------- ३३
जीवदया का विश्लेषण – पं. बंशीधर व्याकरणाचार्य ---------- ३७
सम्यक् चारित्र – पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री ---------- ४६
जैन शासन – पं. नरेन्द्रकुमार न्यायतीर्थ ---------- ५६
जैन साधना-पद्धति अर्थात् श्रावक की ११ प्रतिमाएँ – व्र. विद्युल्लता शाह ---------- ६०
Five Controlling Factors-A Unity Admist VArities – Prof. Mahesh Tiwari ---------- 66
Jainism-Symbol of Emergence of New Era – Dr. Sangha Sena ---------- 71
Jaina Ethical Theory – Dr. Kamal Chand Sogani ---------- 73
The Jaina Value of Life – Dr. Ramjee Singh ---------- 77
Abandonment of Passions in Jainism – Dr. B. K. Sahay ---------- 81
Jain Concept of Ahimsa – Dr. P. M. Upadhye ---------- 83
अहिंसा का स्वरूप और महत्व – डॉ. चन्द्रनारायण मिश्र ---------- ८५
जैनधर्म-करुणा की एक अजस्र धारा – श्री सुमत प्रसाद जैन ---------- ९२
सुगत-शासन में अहिंसा – प्रो. उमा शंकर व्यास ---------- ९९
जैन दर्शन में अहिंसा – श्री सुनील कुमार जैन ---------- १०३
श्रमण-संस्कृति का युगपुरुष हिरण्यगर्भ – डॉ. हरिन्द्र भूषण जैन ---------- १०५
भगवान् महावीर का जीवन दर्शन – श्री नीरज जैन ---------- १०८
व्यावहारिक जैन प्रतिमानों की आधुनिक प्रासंगिकता – डॉ. एल. के. ओड ---------- ११०
जैन धर्म के नैतिक अमोघ अस्त्र – डॉ. उमा शुक्ल ---------- ११६
अनेकान्तात्मक प्रवचन की आवश्यकता – डॉ. रतनचन्द्र जैन ---------- ११९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन योग-परम्परा में क्लेश-मीमांसा – कु. अरुणा आनन्द ----------१२१
कल्याणकों में ज्ञान कल्याणक – डॉ. कन्छेदी लाल जैन ---------- १२४
उत्तम ब्रह्मचर्य-मोक्षमार्ग का अन्तिम चरण – श्री प्रतापचन्द्र जैन ---------- १२७
जैन धर्मशास्त्रों और आधुनिक विज्ञान के आलोक में पृथ्वी – डॉ. दामोदर शास्त्री --------- १२९
जैन इतिहास, कला और संस्कृति ---------- १-१८०
सम्पादकीय ----------१
संस्कृति का स्वरुप भारतीय संस्कृति और जैन संस्कृति – प्रो. विजयेन्द्र स्नातक ----------९
The jaina inseriptions from Mathura – Dr. Umakant P. Shah ---------- 17
Dikpalini matrikas – Prof. Arya Ramchandra G Tiwari ---------- 19
भारतीय धार्मिक समन्वय में जैनधर्म का योगदान – प्रो. कृष्मदत्त वाजपेयी ---------- ३६
अमृतचन्द्र और काष्ठा संघ – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री ---------- ३९
जैन सरस्वती प्रतीमाओं का उदभव एवं विकास – डॉ. ब्रजेन्द्र नाथ शर्मा ---------- ४२
चतुर्विध संघ- प्रस्तरांकन – श्री शैलेन्द्रकुमार रस्तोगी ---------- ४६
मूलाराधना एतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन – प्रो. राजाराम जैन -------- ५७
मौर्य चन्द्रगुप्त विशाखाचार्य – श्री चन्द्रकान्त बाली ---------- ७३
जैन साहित्य में आर्थिक ग्राम- संगठन से सम्बन्ध मध्यकालिन.. – डॉ. मोहनचन्द ------- ८०
तीर्थंकर तथा वैष्णव प्रतिमाओं के समान लक्षण – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ---------- ९४
मालवा से प्राप्त अच्युता देवी की दुर्लभ प्रतिंमाएँ – डॉ. सुरेन्द्रकुमार आर्य ---------- ९५
एशियाई श्रमण परम्परा एक विहङ्गम दृष्टि – प्रो. चन्द्रशेखर प्रसाद ---------- ९७
जैन धर्म, जैन दर्शन तथा श्रमण संस्कृति – डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे ---------- १०५
भारतीय संस्कृति में श्रमण संस्कृति का योगदान – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन ---------- १०८
जैनधर्म और उसका भारतीय सभ्यता और संस्कृति को योगदान – डॉ. चमनलाल जैन ---------- ११७
जैन परम्परा का सांस्कृतिक मूल्यांकन – डॉ. मोरेश्वर पराड़कर ---------- १२३
भगवान महावीर श्रमण संस्कृति के महान उत्थापक – डॉ. नन्दकिशोर उपाध्याय -------- १२७
आन्ध्रप्रदेश में लोक संस्कृति की जैन परम्परा – डॉ. कर्ण राजशेषगिरिराव ---------- १३०
Jaina influence on taniks – Prof. S. Thanyakumar ---------- 133
प्राचीन जैन स्थल भद्दिलपुर ऐतिहासिकता – डॉ. के. सी. जैन ---------- १३८
दिगम्बर तीर्थ गेरसप्पा के जैन मन्दिर और उनकी वर्तमान दुर्दशा – श्री अगरचन्द नाहटा ---------- १४०
जैनधर्म और स्थापत्य का संगम तीर्थ ओसिया – डॉ. सोहनकृष्ण पुरोहित ---------- १४२
प्रसिद्ध कला तीर्थ राणकपुर – डॉ. चेतन प्रकाश पाटनी ---------- १४६
जैन सांस्कृतिक गरिमा का प्रतीक बुन्देलखण्ड – श्री विमल कुमार जैन सोंरया ---------- १४९
मालवा की परमारकालीन जैन प्रतिमाएँ – डॉ. मायारानी आर्य ---------- १५१
जैनधर्म में देवियों का स्वरुप – डॉ. पुष्पेन्द्रकुमार शर्मा ---------- १५३
जैन आगमों में नारी – डॉ. विजयकुमार शर्मा ---------- १५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिल्ली का ऐतिहासिक जैन सार्थवाह नट्टल साहू – आचार्य श्री कुन्दनलाल जैन --------- १६८
जैन मन्दिरों के शासकीय अधिकार – श्री लालचन्द जैन ---------- १७३
जयपुरी कलम का एक सचित्र लेख – श्री भँवरलाल नाहटा ---------- १७४
मोहन- जो दडो जैन परम्परा और प्रमाण – मुनि श्री विद्यानन्दजी---------- १७६
गोम्मटेश दिग्दर्शन ---------- १-५२
सम्पादकीय ----------१
Spiritual magnificence of bhagawan gommateshwara and foreign writers – T. K. Tukol ----------5
Colossal image of bahubali the sublime seulpture – Dr. Vilas A Sangve ---------- 11
Gommateswara mahamastakabhishek – Sh. Satishkumar Jain ---------- 14
श्रवणबेलगोला के अभिलेखों में दान परम्परा – श्री जगबीर कौशिक---------- 20
युगों- युगों में बाहुबली – डॉ. विद्यावती जैन---------- २६
श्रवणबेलगोला के अभिलेखों में वर्णित बैंकिंग प्रणाली – श्री बिशनस्वरूप रुस्तगी---------- ४२
जन-जन की श्रद्धा के प्रतीक भगवान गोम्मटेश – सुमतप्रसाद जैन ----------४५
परिशिष्ट
लेखकानुक्रमणिका
दातारों की नामावली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org